IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बदलते सामाजिक मूल्य और समकालीन महिला रचनाकारों के साहित्य में नारी विमर्श

शोधार्थी राजेष्वरी
जीवाजी विष्वविद्यालय ग्वालियर
मार्गदर्षिका
प्राचार्य डॉ. ज्योती उपाध्याय
वी.आर.जी. गर्ल्स कॉलेज,
मुरार ग्वालियर

भारतीय समाज में हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की एक अत्यंत पुरातन परंपरा है। इस दृष्टि से भारतीय संदर्भ में विमर्श शब्द का अर्थ है शाष्वत मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए विवेक सहित ज्ञान आधारित तर्क–वितर्क द्वारा किसी विशेष विषय में अपना विचार प्रस्तुत करना। मौखिक संवाद, परिचर्चा या वार्तालाप करना। विमर्श शब्द अपने इस अर्थ की दृष्टि से भारतीय शास्त्रार्थ परंपरा का सहचर जान पड़ता है। सकारात्मक संवाद की इस व्यवस्था के माध्यम से अनेक अनसुलझे प्रश्नों का हल खोजकर गूढ़त्तर विषयों की रहस्यमयी परतों को खोलने का काम सुगमता से किया जा सकता है। बदलते युग की परवर्ती पीढ़ी में अपनी इस प्रामाणिक और प्राचीन मूल्य परंपरा के प्रति किंचित उदासीनता एवं उपेक्षा का भाव आज चिंता का विषय है। अपने पूर्वजों के इस प्रदेय से नवीन पीढ़ी ने अपनी अनगिनत समस्याओं एवं जिज्ञासाओं को समाधान पाया है।

''भारतीय समाज के बदलते जीवन मूल्यों एवं पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण ने आज फिर हमारी अस्मिता के लिये संकट खड़ा कर दिया है। पश्चिमी सभ्यता के भोगवादी दर्शन एवं भौतिकतावाद की आंधी दौड़ में शामिल हमारा आधुनिक समाज भी संक्रांति और संक्रमण के भीषण दौर से गुजर रहा है। भारतीय जीवन मूल्यों पर जब–जब पश्चिमी की ओर से प्रहार हुआ है, हमारा प्राचीन गहन चिंतन हमारी व्यावहारिक ज्ञान परंपरा, हमारे वेद, उपनिषद, हमारा प्रेरणाप्रद साहित्य, गीत, कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, ललित निबंध, लोक साहित्य एवं साहित्य कला–संस्कृति की विभिन्न विधाएँ हमेशा एक सषक्त और सुदृढ़ कवच बनकर खड़े रहे हैं।''[1]

भारतीय परिप्रेक्ष्य में नारी विमर्श की भूमिका सामाजिक परिवर्तन में विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही है। पश्चिमी विचारों के रेषमी परिधानों में लिपटे विद्वानों ने 'नारी विमर्श' जैसे शब्दों को लेकर इन दिनों काफी नकारात्मक माहौल खड़ा कर रखा है। पश्चिमी विचारों के असीमित आयात एवं प्रभाव का ही यह दुष्परिणाम है कि आज भारत भूमि पर जन्मी, पली–बढ़ी तथा इसकी मिट्टी में खेलकूद कर विकसित एवं सशक्त बनी भारतीय नारी भी अपनी दैहिक स्वच्छंदता को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानने वाली अंधी परंपरा की अनुगामिनी बन रही है। अपनी गौरवशाली महान

परंपरा से दूर अब वह कृत्रिम फैशनपरस्त भौतिकवाद विकास के दलदल की ओर शनैः शनैः आगे बढ़ रही हैं।

''पश्चिमी आंदोलनों के प्रभाव के कारण धरती पर स्वार्थान्ध–प्रतिद्वन्द्विता, स्वच्छन्दता, दिखावटी रिष्ते, संवेदनहीनता और अमानवीयता का घोर पतनषील वातावरण छाया हुआ है। जबकि प्रकृति के प्रत्येक क्रिया व्यापार में हमें भारतीय नारी की गुणवत्तापूर्ण छवि का निर्देशन प्रतिपल प्राप्त होता रहा है। नारी को मातृशक्ति के रूप में पूज्य मानते हुए उसे पृथ्वी, नदी आदि उपमाओं से अलंकृत कर उसके अस्तित्व, व्यक्तित्व, सत्ता और अस्मिता को प्रतीकात्मक रूप से सम्मानित किया गया है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' नारी पुरुष की परछाई नहीं उसकी शक्ति रही है।''[2]

कहा गया है– ग्रहणी बिन घर भूत समाना पृथ्वी की भाँति नारी धैर्य सुनियोजित क्रियाशीलता एवं संतुलित गतिशीलता का प्रतीक है। नारी सृष्टि की तरह सृजनशील है, वह जन्म दायिनी ही नहीं जीवनदायिनी भी है। जिस तरह पृथ्वी कभी सूर्य से प्रतिस्पर्धा नहीं करती वैसे ही नारी अपने जीवन का सारा रस अपने परिवार में पिता, भाई, बेटा तथा समस्त परिजनों पर लुटाती है और स्वयं त्यागपूर्ण तपस्विनी सा जीवन जीती है। भारतीय नारी नदी के समान स्वाभिमान, साहस तथा लक्ष्य के प्रति निरंतर एकाग्रता की प्रतीक है। एक नारी की तरह निर्भीक होकर अपने मूल्यों और मानकों को स्वीकार करते हुए वह उन्नति का मार्ग चुनती है। नदी अपने लक्ष्य समुद्र तक पहुँचने के लिये अपनी यात्रा में आने वाले दुगर्म पथ के अवरोधों और चट्टानों को चकनाचूर कर सागर से मिलती है। नदी का त्याग अभिनंदनीय है। वह सागर में विलीन होकर स्वयं सागर हो जाती है। अपनी मिठास को समुद्र के खारेपन में विलय कर देती है।

''भारतीय नारी भी पश्चिम के खोखले अस्तित्ववादी दर्शन की संघर्षषील अवधारणा के प्रति पूर्ण विमोह रखते हुए अपने संपूर्ण जीवन आत्मीय रिश्तों के पल्लवन में विलय कर देती है, तिरोहित कर देती है। वह जीवनदायिनी नदी के सागर हो जाने की त्यागमयी परंपरा की निष्ठावान अनुयायी है। भारत की शौर्य पूर्ण गाथाओं के पृ"ठों पर जितनी भी वीरांगनाओं एवं महान स्त्रियों का स्वर्णिम उल्लेख मिलता है, नदी उन सबका प्रतीक है। नारी आज 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसा नारा बनकर रह गई है। सीता, सावित्री, अनसुइया, कौशल्या, देवकी, यशोदा, महारानी लक्ष्मीबाई, पन्नाधाय, ज्योतिबा फुले और रानी दुर्गावती के देश में जहाँ नारी–पुरुष परस्पर एक दूसरे के पूरक और शक्ति रहे हैं, आज समानता के मानवीय अधिकारों के लिये नारी फिर एक बार संघर्ष की भूमि पर खड़ी है।''[3]

पश्चिम ने हमारी मूलभूत जीवन शैली को तहस–नहस कर हमारे प्राचीन मूल्यों एवं मान्यताओं को खंडित करने का कार्य तेज रफ्तार से शुरू कर दिया है। हमारे मूल्य, आदर्श, आचरण, संस्कार और मनोवृत्तियाँ इससे प्रभावित हुई है। आज बदलते सामाजिक मूल्य समकालीन महिला रचनाकारों के साहित्य में अपनी एक नई पहचान के साथ परिलक्षित हो रहे हैं। नारी विमर्श महिला रचनाकारों के साहित्य में इन दिनों केंद्रीय मुद्दा बना हुआ है।

''समकालीन साहित्य में नारी विमर्श की चर्चा प्रायः नारी के शोषण, घरेलू हिंसा, अत्याचार, दहेजप्रथा, अन्याय एवं मानवीय अधिकारों के हनन से ही शुरू होती है। पुरुष वर्चस्व की मानसिकता और भारतीय समाज में सामंती मूल्यों के अवशेषों की नारी विमर्श में चर्चा होना भी स्वाभाविक है। नारी को आज भी कुछ समाजों में वीर भोग्या वस्तु ही समझा जाता है तो कुछ समाज नारी को द्वितीय कोटि का मानव मानते हैं। कुछ ऐसे भी असंस्कारित अभद्र समाज है जो नारी को आज भी 'मनुष्य' नहीं मानते? जबकि नारी आज हर क्षेत्र में पुरू"ाों के साथ क़दम से कदम मिलाकर प्रगति के

शिखर स्पर्श कर रही है। कई क्षेत्रों में वह पुरुषों को भी पीछे छोड़ चुकी है। परमाणु विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, जल–थल एवं वायुसेना, शिक्षा, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, साहित्य, संस्कृति, कला आदि अनेक क्षेत्रों में नारी अपने कीर्तिमान स्थापित कर रही है। एक ओर भारतीय सामाजिक परिवेश में नारी के उत्पीड़न और व्यथा की कथा लिखी जा रही है तो दूसरी और समाज में हो रहे मानवीय मूल्यों के ह्रास और नैतिक पतन की पराकाष्ठा देखकर महिला रचनाकार नारी सशक्तिकरण की दिशा में निरंतर अपने लेखन को धार दे रहे हैं। समकालीन कवयित्रियाँ एवं कथाकार उपन्यासकार अपने साहित्य में नारी को पूर्ण स्वातंत्र्य व्यक्तित्व के रूप में चित्रित कर उसके संघर्ष और वाणी को शब्द दे रहे हैं।''[4]

कथाकार मेहरुन्निसा परवेज ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में बदलते सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में नारी विमर्श को प्रमुखता के साथ अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनके उपन्यास आँखों की देहलीज 'समरांगण', 'पासंग', 'अकेला पलाष' आदि कृतियाँ इसका प्रमाण है। डॉ. कामिनी की कहानियों में भी यही दर्द उभर कर सामने आता है। उनकी कहानियों में परंपरागत विवाह और प्रेम विवाह दोनों का चित्रण है एवं विश्लेषण मिलता है। उनके चर्चित कथा संग्रह 'करील के कांटे' की कहानी 'हथेली की किरच की नायिका सुधा में प्रेम विवाह किया है पर जब उसका पति ही ''नीना की बराबरी में तुम कहाँ लगती हो? गजब की सेक्स अपीलिंग है उसमें, जो तुममें नहीं है।''[5] जैसी छिछोरी बातें कहकर उसे प्रताड़ित करे तब उसका परिणाम निश्चित है कि संबंध विच्छेद होगा और हुआ भी। प्रेम विवाह ही असफल नहीं होते पारंपरिक विवाहों में भी दरारें पड़ जाती है। 'षांता दीदी' कहानी की नायिका शांता का परंपरागत विवाह हुआ है, पर उसके दांपत्य जीवन में खटास आ जाती है। वह अपने जीवन के 33 वर्ष मायके में जाकर व्यतीत कर देती है। हिंदुओं में कभी बहू पत्नी प्रथा रही होगी किंतु आज वह अपराध है लेकिन मुस्लिम समाज में मुसलमान आज भी एक से अधिक पत्नियाँ रख सकता है। यद्यपि आज के आर्थिक युग में ऐसा करना अत्यंत जोखिम भरा कार्य है। डॉ. कामिनी की बुझते अंगारे कहानी का यही कथानक है। कामिनी जी ने बदलते समाज के मूल्यों की गिरावट को अपनी लेखनी से सशक्त अभिव्यक्ति दी है।

'गुलदस्ता' कहानी संग्रह में बेमेल विवाह की कहानी 'बैसाखियों पर की यही समस्या है। कुँआरी लड़की का विवाहित पुरुष के प्रति आकर्षण बिखरे हुए मोर पंख कहानी संकलन की कहानी 'रेत पर चलते हुए' में यही प्रदर्शित हुआ है। डॉ. कामिनी मानवता को ही सबसे बड़ा धर्म मानती हैं। लाडली के भुवन कहाँ कहानी में निस्संतान लाड़ली कक्की मुहल्ले–पडोस के छोटे–छोटे बच्चों को अपनी संतान मानती है। इतना ही नहीं वह उनमें भगवान का रूप निहारती है। ''कामिनी की कहानियों में बुंदेली संस्कृति की झलक भी देखने को मिलती है। एक नारी रचनाकार की कलम से नारी के लिये किया गया यह विमर्श सामयिक और उत्कृष्ट बन पड़ा है।''[6]

श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी के कथा संग्रह 'मृगतृष्णा' की कहानियाँ 'कब तक सहोगी कविता', 'कड़वा सच', 'मृगतृष्णा' और अंतस की ज्वाला में नारी जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखकर यही विमर्श प्रस्तुत किया गया है। सुबोध चतुर्वेदी के कहानी संग्रह 'नियति चक्र' की कहानियाँ 'बिखरे स्वप्न', 'दुःखवा कासे कहूँ', 'रायपुर वाली भौजी' और 'एक कहानी यह भी' नारी जीवन के संत्रास और संघर्ष की ऐसी ही कहानियाँ है। उनकी जाहि विधि राखे राम' कथा संग्रह की कहानी और जिंदगी हार गई तथा रिश्तो का सच भी जीवन मूल्यों के बदलते यथार्थ को उजागर करती कहानियाँ है।

कथा संग्रह 'अपनी खिड़की से' गिरजा कुलश्रेष्ठ की नारी विमर्श की चर्चित कहानियों का संकलन है। जिसमें 'अपनी खिड़की से' 'पतंग' और 'तनु को रोना क्यों आ गया' कहानियाँ नारी विमर्श तथा बदलते मूल्यों को उजागर करती श्रेष्ठ कहानियाँ है। उन्हीं के कथा संग्रह 'कर्जा वसूली' में संकलित 'शपथ पत्र', 'अपने–अपने कारावास', 'नामुराद' तथा 'पियक्कड़' नारी जीवन की त्रासद स्थितियों का बेबाक चित्रण करती है।

पगडंडिया गिरजा कुलश्रेष्ठ का लघु कथा संग्रह है। इसमें संग्रहित 'लघु कथाएं', 'अनुत्तरित', 'दायरा', 'करवा चौथ स्पेशल' 'पगडंडियाँ', 'काँच की दीवार', 'पराश्रिता', मजबूरी और मुर्दाघर बदलते सामाजिक मूल्यों की नारी विमर्श केंद्रित लघु कथाएं हैं। एक ज्वार उतरता सा डॉ. हेमनलिनी स्वामी का पहला कथा संग्रह है। संग्रह में संकलित कहानियाँ नारी विमर्श तथा बदलते सामाजिक मूल्यों की कहानियाँ है। इनमें बुआजी, अनाम रिश्ते, किसकी गलती, दर्द के अनुबंध, एक थी परिणीता और किसका कसूर, नारी विमर्श केंद्रित बदलते सामाजिक मूल्यों को उकेरती यथार्थपरक कहानियाँ है।

नाप लो आकाश संगीत गुप्ता की कहानियों का प्रथम संग्रह है। जिसमें सीमा, बेटी आ जाओ, काकी और रिक्ता, नारी जीवन की करूण कथाएं हैं, जिनके माध्यम से संगीता जी ने बदलते समाज में नारी का हिम्मत के साथ लड़ते रहने की प्रेरणा देने का प्रयास किया है।

''बदलते सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में समकालीन कवयित्रियों ने अभी अपनी धारदार कलम से सामाजिक विसंगतियों पर खड़ा प्रहार किया है। मानवीय संवेदना की प्रखर गीत कवयित्री माया वर्मा अपने गीत संग्रह नये संदर्भ के माध्यम से देश की नारियों को वीरांगना बनकर अपनी अस्मिता के लिये संघर्षरत रहने का संदेश दिया है।''[7] वे लिखती है–

''रूठती है रूठ जाये शौक से दुनिया,

आज हमने आत्मबल अपना बढ़ाया है।।''[8]

उस पार कर सच की रचनाकार आज हमने प्राण का साहस जगाया है। डॉ. ऋचा सत्यार्थी अपनी एक ग़ज़ल में कहती है–

''चल रही है आजकल अधिकार की भाषा।

लोग समझेंगे नहीं अब प्यार की भाषा।।''[9]

अंजना मिश्रा अपनी काव्यकृति बात समंदर से में माँ की कोख में पल रही बेटी की पीड़ा का अनुभव करते हुए लिखतीं है–

''माँ मुझे कोख में मत सुलाना।

मैं भी लेना चाहती हूँ जन्म

मैं भी देखना चाहती हूँ आकाश।

और उसके रंग,

ओस की पहली बूंद पर

मेरा भी हक है।''[10]

'धूप ही धूप है' जिस तरफ देखिये (सुनीति बैस) राजकुमारी रश्मि की 'धूप के पंख', 'एक और शंखनाद', 'कस्तूरी गंध के हिरन', 'पत्र लिखा किसने गुमनाम', 'देख रहा है आज कबीरा', 'अक्षर बोलते हैं', 'गवाही के बावजूद' आदि अपनी इन सभी काव्य कृतियों में सामाजिक परिवेश, बदलते मूल्य और नारी अस्मिता के संघर्ष की प्रखर व्यंजनापरक अभिव्यक्ति को सशक्त कर स्वर मिला है। रश्मि जी लिखती है–

''जो मषालों सी जल रही होगी।

वह गज़ल हमने ही कही होगी।।

जिसने नामो निशा मिटा डाला,

आग सदियों से जल रही होगी।।

होंठ सख्ती से किस क़दर चुप हैं,

क्या पता, बात क्या रही होगी।।''[11]

माया वर्मा जी अपनी काव्य कृति नारी जागरण की सभी रचनाएं नारी के उद्धार और कल्याण की रचनाएं हैं। मानवता भारतीय संस्कृति का गहना है। वे मानवता के विकास हेतु नारियों को प्रेरित करती है।

''उठो नारियों तंत्र त्यागो, जग को स्वर्ग बनाना है।

भवन गिर रहा मानवता का, उसको पुनः उठाना है।।

है बड़ी जरूरत इस युग की नारी को बंधन मुक्त करो।

प्रगति करें हम लेकिन अपना ज्ञान विवेक बढ़ाएं।

अपनी मर्यादा–परंपरा को तनिक नहीं बिसराए।।''[12]

बदलते सामाजिक परिवेश, जीवन मूल्य और आदर्श तथा नारी जीवन की विडंबनाएँ हिंदी की महिला रचनाकारों के साहित्य में अपने पूरे ओज और तेज के साथ प्रखरता से अभिव्यक्त हुई हैं। नारी का चरित्र अब शक्ति का प्रतीक है, अबला जीवन की कहानी नहीं। सारांषतः कह सकते हैं कि बदलते समाज में नारी भी अब नया अवतार ले चुकी है।

संदर्भ संकेत

[1] इंगित, महिला साहित्यकार सम्मेलन विषेषांक, 2018, म.भा. हिन्दी साहित्य सभा, पृ''ठ–8

[2] सं. मंदाकिनी 'ार्मा, इंगित, अक्टूबर 2018, पृ''ठ–6

[3] सं. कुँवर सिंह पवार, भारत भूमि, 5 मार्च 1968, पृ''ठ–6

[4] अक्षर विष्व, नई दुनिया 2007, फरवरी 5, ग्वालियर, पृ''ठ–10

[5] डॉ. कामिनी, करील के कांटे, संस्करण–1987, सेंवड़ा (दतिया), म.प्र., पृ''ठ–49

[6] डॉ. कामिनी, करील के कांटे, संस्करण–1987, सेंवड़ा (दतिया), म.प्र., पृ''ठ–50

[7] सं. भगवानस्वरूप चैतन्य, लोकमंगल पत्रिका, 2009, पृ''ठ–3

[8] माया वर्मा, नये संदर्भ, भावना प्रकाषन–ग्वालियर, 1984, पृ''ठ–8

[9] ऋचा सत्यार्थी, उस पार का सच, साहित्य साधना संसद प्रकाषन ग्वालियर, 2018, पृ''ठ–4

[10] अंजना मिश्र, बात समंदर से, अनुभव प्रकाषन दिल्ली, पृ''ठ–2010, पृ''ठ–5

[11] राजकुमारी रष्मि, गवाही के बावजूद, साहित्य निधि प्रकाषन, व''र्ा 1994, पृ''ठ–18

[12] माया वर्मा, नारी जागरण, भावना प्रकाषन ग्वालियर, व''र्ा–1979, पृ''ठ–16